आर एल ए समाचार

आपकी आवाज़ आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय | सत्र 2015–16 | पृष्ठ 1–4

पत्रकारिता के आयाम बदले

पत्रकारिता ने लोकतंत्र को मजबूत किया : आनंद प्रधान

आरएलए संवाददाता

नई दिल्ली। पत्रकारिता, लोकतंत्र और समाज का एक मजबूत स्तंभ है। समाज बदलने के साथ–साथ पत्रकारिता में भी बदलाव आया है। यह बदलाव भारत ही नहीं पूरी दुनिया की मीडिया में देखने को मिल रहा है। यह बात चर्चित मीडिया विश्लेषक डॉ. आनंद प्रधान ने रामलाल आनंद कॉलेज में 'पत्रकारिता के बदलते आयाम' विषय पर व्याख्यान देते हुए कही।

90 वर्ष पहले हुई थी घोषणा

रामलाल आनंद कॉलेज के हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान की शुरुआत डॉ. आनंद प्रधान ने संपादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराड़कर के एक कोट से की, जिसमें उन्होंने करीब 90 साल पहले ही भारतीय पत्रकारिता में आने वाले समय में बदलावों की घोषणा कर दी थी।

उन्होंने कहा कि आजादी के दौरान पत्रकारिता ने लोगों को जागरूक करने का काम किया तो आजादी के बाद करीब बीस साल तक देश की नींव मजबूत करने में साथ दिया। तत्पश्चात धीरे–धीरे वह वॉचडॉग की भूमिका में आती गई। उन्होंने अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन की किताब का उल्लेख करते हुए बताया कि भारतीय लोकतंत्र अगर गतिशील है तो उसकी एक प्रमुख वजह पत्रकारिता भी रही है। इसी के साथ मशहूर पत्रकार पी. साईनाथ का जिक करते हुए किसानों की आत्महत्याओं के संबंध में की गई उनकी रिपोर्टिंग और दबाव में आई सरकार के बारे में बताया।

सोशल मीडिया ने बदली दुनिया

उन्होंने प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया की अनेक सकारात्मक घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सोशल मीडिया के आ जाने से भारतीय मीडिया और अधिक पारदर्शी हुआ है। साथ ही मीडिया में पेड न्यूज समेत आई अनेक विकृतियों को भी रेखांकित करते हुए विद्यार्थियों को उनसे बचने की सलाह दी।

नवजागरणकालीन पत्रकारिता अहम

आनंद प्रधान के व्याख्यान से पहले हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ने व्याख्यान के विषय से परिचित कराते हुए नवजागरण कालीन पत्रकारिता की आधार स्तम्भ रही पत्रिका सरस्वती, कविवचन सुधा, मतवाला, प्रताप की पत्रकारिता के बारे में विस्तार से बात रखी।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा ने व्याख्यान में आए लोगों का स्वागत करते हुए मीडिया में आए भाषायी बदलावों पर अपने विचार रखे। साथ ही भाषा का सही स्वरूप बनाए बनाए रखने पर जोर दिया। अंतिम वक्ता के तौर पर विभाग की शिक्षिका डॉ. अर्चना गौड़ ने पत्रकारिता के अनेक सफेद पक्षों पर बात की। उन्होंने व्याख्यान में शिरकत करने वालों का धन्यवाद ज्ञापन भी किया। इससे पहले डॉ. मानवेश नाथ दास और डॉ. पारुल जैन ने पत्रकारिता से जुड़े अनेक मुद्दों पर अपनी बात रखी। अंत में सवाल–जवाब का सत्र चला तो संचालन डॉ. अटल तिवारी ने किया।

पोस्टरों ने ध्यान खींचा

अतिथियों का स्वागत बीजेएमसी तृतीय वर्ष के विद्यार्थी अभिषेक कुमार ओर पूजा शुक्ला ने किया वहीं इतिहास के विद्यार्थी शुभम के बनाए पोस्टरों ने लोगों का खूब ध्यान खींचा। इस मौके पर विभाग की शिक्षिका डॉ. नीलम ऋषिकल्प, डॉ. सुभाष चन्द्र डवास, डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. श्रुति आनंद समेत बड़ी संख्या में शिक्षक और पत्रकारिता के विद्यार्थी मौजूद थे।

- बाबूराव विष्णु पराड़कर ने करीब 90 साल पहले ही भारतीय पत्रकारिता में आने वाले समय में बदलावों की घोषणा कर दी थी
- अमर्त्य सेन के मुताबिक भारतीय लोकतंत्र अगर गतिशील है तो उसकी एक प्रमुख वजह भारतीय पत्रकारिता भी रही है

आनंद प्रधान

- पेड न्यूज से बचने की दी सलाह

तीनमूर्ति और नेहरू

अभिषेक कुमार

नई दिल्ली। वैसे तो तीनमूर्ति भवन कई बार गया हूं, लेकिन कॉलेज की तरफ से शिक्षकों के अनुभव के साथ देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के विचारों की प्रासंगिकता व उनकी दूरदर्शिता पर बात करते हुए तीनमूर्ति भवन घूमने का एक अलग अनुभव हुआ। तीनमूर्ति भवन जवाहर लाल नेहरू का सरकारी निवास स्थल था। करीब 44 एकड़ जमीन पर स्थापित इस भवन का निर्माण 1930 में किया गया था। प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार रावर्ट टॉर ने उस वक्त इस भवन का डिजाइन तैयार किया था।

नेहरू की मृत्यु के बाद इस भवन को एक स्मारक के रूप में संरक्षित कर दिया गया। इस परिसर में नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी है, जो भारतीय इतिहास व समाज के अनुसंधान के लिए उपयुक्त केंद्र है। नेहरू संग्रहालय में नेहरू परिवार के एलबम, उनके व्यक्तिगत पत्र और ढेर सारा सामान सहेज कर रखा गया है। यहां रखे कुछ फोटो में नेहरू हीरोनुमा राजकुमार लगते हैं तो कई को देखकर यह भाव मन में आता है कि उनकी सादगी में भी उनके विचारों की खूबसूरती झलकती है। सत्ता के शीर्ष पर पहुंच कर भी नेहरू अपनी राजनीति को सामान्य और अपने आप को राष्ट्र का सेवक मानते थे। संग्रहालय घूमते समय तो सिर्फ नेहरू व भारत के अतीत में खोया रहा।

इस बीच ख्याल आया कि अगर हिन्दुस्तान को नेहरू के बाद उनकी जैसी सोच वाले नेता मिलते तो धर्मनिरपेक्षता महज एक राजनीतिक दर्शन नहीं रहती बल्कि बड़े फलक तक फैल चुकी होती। नेहरू जिस दल की नुमाइंदगी करते थे उसी दल के नेताओं ने व्यापक परिप्रेक्ष्य में नेहरू की सोच को आगे नहीं बढ़ाया। इसी बीच साथी अनुराग ने कहा कि काश! नेहरू के रहते हम भी पृथ्वी पर आ गये होते तो हम भी इंदर मल्होत्रा जी की तरह कहते कि हिंदुस्तान दुनिया की सबसे खास जगह है क्योंकि यहां नेहरू रहते थे।

- करीब 44 एकड़ पर स्थापित है तीनमूर्ति भवन
- 1930 में इस भवन का किया गया था निर्माण, इसी परिसर में स्थित है नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी

शैक्षिक भ्रमण पर यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया गए हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को पत्रकारिता के गुर बताते पत्रकार आबिद अनवर।

उत्तर कोरिया ने किया हाइड्रोजन बम परीक्षण

नई दिल्ली। चीन के पड़ोसी देश उत्तर कोरिया ने छह जनवरी को पहले हाइड्रोजन परमाणु बम का परीक्षण कर दुनिया में हड़कंप मचा दिया है। परीक्षण इतना ताकतवर था कि आसपास के क्षेत्रों में 5.1 तीव्रता का भूकंप रिकॉर्ड किया गया।

भूकंप के बाद उत्तरी कोरिया के सरकारी टीवी चैनल ने हाइड्रोजन बम के सफल परीक्षण की पुष्टि कर दी। इसके बाद उत्तरी कोरिया यूनाइटेड नेशन द्वारा प्रतिबंधित किया जाने वाला चौथा देश बन गया है, जिन्होंने प्रतिबंधित किये जाने के बाद भी परमाणु परीक्षण किया है। उत्तरी कोरिया काफी समय से परमाणु कार्यक्रम को लेकर अमेरिका, चीन और यूनाइटेड नेशन देशों की आंखों में चुभता रहा है।

उत्तरी कोरिया ने यह भी कहा है कि वह यूनाइटेड नेशन की शत्रुतापूर्ण नीतियों से अपने देश की रक्षा करने के लिए परमाणु कार्यक्रमों में मजबूती लाना जारी रखेगा। परीक्षण किये जाने के एक महीने पहले ही उत्तरी कोरिया के प्रमुख लीडर किम जोंग उन्स ने कहा था कि उनका देश पहले हाइड्रोजन बम के परीक्षण के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि उनके स्वर्गवासी पिता पूर्व प्रमुख किम जोंग ली ने उत्तरी कोरिया को हाइड्रोजन बम और एटॉमिक बम संपन्न देशों की श्रेणी में लाकर देश की संप्रभुता और गरिमा की रक्षा करने का प्रण लिया था। यूनाइटेड किंगडम के रक्षा सचिव फिलिप हमोंड ने परीक्षण के तुरंत बाद ट्वीट करके इस परीक्षण की निंदा की।

- उत्तरी कोरिया ने कहा कि वह संयुक्त राष्ट्र की शत्रुतापूर्ण नीतियों से रक्षा करने के लिए परमाणु कार्यक्रमों में मजबूती लाना जारी रखेगा और पूर्व प्रमुख के सपनों को साकार करेगा

क्या है नेट न्युट्रेलिटी बनाम फ्री बेसिक्स

आरएलए संवाददाता

नई दिल्ली। पिछले 24 दिसंबर को दिग्गज भारतीय दूरसंचार कंपनी एयरटेल द्वारा इंटरनेट आधारित फोन कॉल्स के लिए अलग से पैसा वसूले जाने के बाद एक बार फिर इंटरनेट प्रेमियों के बीच नेट न्युट्रेलिटी का मुद्दा बहस में आ गया। इसके बाद एयरटेल ने इसे वापस ले लिया।

न्युट्रेलिटी पर हो हल्ला के बीच भारतीय दूरसंचार नियामक (ट्राई) के चेयरमैन राहुल खुल्लर ने कहा कि इंटरनेट सापेक्षता का सिद्धांत सभी इंटरनेट यातायात के लिए समान व्यवहार की वकालत करता है। इसमें किसी व्यक्ति या कंपनी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता है। इसके बाद ट्राई ने लोगों के लिए एक परिचर्चा पत्र जारी कर प्रतिक्रिया देने का आग्रह भी किया। पिछले साल फेसबुक और रिलायंस कम्युनिकेशंस ने मिलकर फ्री बेसिक कांसेप्ट का इजाद किया, जो अप्रत्यक्ष तरीके से नेट न्युट्रेलिटी सिद्धात के खिलाफ था। हालांकि फ्री बेसिक के पीछे तर्क देते हुए फेसबुक अपनी सेवा ज्यादा से ज्यादा भारतीयों तक पहुंचाने की बात करता रहा है। रिलायंस अपने ग्राहकों को फेसबुक की सुविधा फ्री में देने पर सहमत हो गया जिसके बाद इंटरनेट प्रेमियों ने इसका विरोध करते हुए यह कहा कि यह फेसबुक का सोचा समझा प्लान है, जिसके द्वारा पहले जनता को फ्री में उपलब्ध करा लत लगाया जाएगा, फिर अन्य साइट या पेज के लिए अलग से पैसा वसूला जाएगा। एक तरफ जहां नेट न्युट्रेलिटी सभी साइटों व एप्लिकेशंस के बीच समानता की बात करता है, वहीं फ्री बेसिक से बड़ी कंपनियों के पेज और साइटों को ज्यादा स्पीड मिलती है और छोटी कंपनियों की साइटों की स्पीड स्लो हो जाती है।

अप्रैल 2015 में एयरटेल ने एयरटेल जीरो करके एक स्कीम चलाई, जिसके तहत विभिन्न एप्लिकेशंस को डेटा खरीदने के लिए आमंत्रित किया गया। एयरटेल डेटा खरीदने वाली कंपनी की सुविधा फ्री में जनता को उपलब्ध कराती। इस स्कीम के आने से बड़ी कंपनियां आसानी से डेटा खरीद कर लोगों के बीच अपनी पहुंच बनाती, लेकिन छोटी और नई कंपनियों के लिए पूंजी की प्रतिस्पर्धा में जगह बनाना मुश्किल होता। इस तरह छोटी व नई कंपनियों के साथ अन्याय होगा।

- फेसबुक और रिलायंस कम्युनिकेशंस ने मिलकर फ्री बेसिक कांसेप्ट का इजाद किया, जो अप्रत्यक्ष तरीके से नेट न्युट्रेलिटी सिद्धांत के खिलाफ था
- एयरटेल ने एयरटेल जीरो नाम से एक स्कीम चलाई, जिसके तहत विभिन्न एप्लिकेशंस को डेटा खरीदने के लिए आमंत्रित किया गया

विभागाध्यक्ष की ओर से...

प्रिय विद्यार्थियों,

हर साल की तरह इस बार भी 'आरएलए समाचार' प्रकाशित हो रहा है। हिंदी–पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के बच्चों द्वारा हर साल निकाला जाने वाला यह समाचार पत्र उनके प्रशिक्षण का हिस्सा है। इसे आकार देते हुए वे काफी हद तक समाचार पत्र निर्माण की प्रकृिया से वाकिफ हो जाते हैं। इसका लाभ उन्हें तब मिलता है जब वे पढ़ाई पूरी करके कॅरियर संवारने के लिए मीडिया के क्षेत्र में जाते हैं। उन्हें समाचार पत्र बनाने के लिए जिन सॉफ्टवेयर पर काम करना होता है उसकी प्राथमिक जानकारी उन्हें पहले से होती है। ऐसे में उनकी नियुक्ति की संभावना बढ़ जाती है। इस बात का उदाहरण पिछले वर्षों में पढ़ाई करके निकले हमारे अनेक विद्यार्थी हैं, जो आज विभिन्न मीडिया हाउस में काम कर रहे हैं।

'आरएलए समाचार' में अनेक विद्यार्थियों ने लेखनी के जरिए प्रतिभा का परिचय दिया है। सम्पादकीय टीम ने उनकी लेखनी को यथा सम्भव जगह दी है। चार पृष्ठीय पत्र की अपनी सीमा है। ऐसे में सभी विद्यार्थियों की रचनाओं को एक साथ प्रकाशित नहीं किया जा सकता, पर उन्हें लेखन कर्म करते रहना चाहिए। इससे जहां भाषायी सुधार होगा वहीं लेखन कला समृद्ध होगी और खबरों की समझ भी बढ़ेगी। इसी आशा के साथ पेश है आरएलए समाचार... ● डॉ. संजय कुमार

जब हम बन गए थे आतंकवादी!

अनुराग आनंद

जब आप सामाजिक कार्यकर्ता बनकर किसी समाज में जाते हैं तो आपको कई विकट समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सोचिए यदि आप भारत–पाक सीमा के किसी जिले में काम करने पहुंचे और आपको आतंकवादी करार देकर आपके पीछे लोगों की भीड़ हो और आप बैग लटकाए आगे आगे भागें तो कितना रोमांचक नजारा होगा?

मैं अपने दो अन्य साथियों के साथ राजस्थान की चवा पंचायत की ओर जा रहा था। ये रिंधरी प्रखंड से 22 किमी की दूरी पर है। राजस्थानी ताऊ ताई की धक्का मुक्की के बीच हम लोग बस में चढ़ ही रहे थे कि बस चल पड़ी, लेकिन पूरे बस के लोगों की नजर हम तीनों को ही निहार रही थी। औरतें मुंह ढककर फुसफुसाते हुए हंस रही थीं जबकि पुरुष उसके विपरीत अपनी मूछों पर हाथ फेर रहे थे। इसी बीच पीछे से एक भारी भरकम आवाज आई–तोरे गांव कौन? उस आवाज में जिज्ञासा, भय और उत्सुकता का सामंजस्य था। मैंने बड़ी उत्सुकता से जवाब दिया, दिल्ली। मैंने स्थानीय भौगोलिक और राजनीतिक व सामाजिक जानकारी उनसे प्राप्त की। बच्चे, बड़े और शिक्षकों से मिलते हुए हमारी बस भी आगे बढ़ते जा रही थी। तेज धूप होने के कारण पानी की बोतलें खाली हो चुकी थीं। दूर दूर घर नहीं दिख रहा था। ऐसे में हम बड़ी मुश्किल से मालानाड़ी गांव पहुंचे।

पानी की टोह में एक दरवाजा खटखटाया तो किसी औरत ने दरवाजा खोला। एक दोस्त पानी की मांग करने ही वाला था कि धम्म से दरवाजा बंद हो गया। काफी चीख चिल्ला कर हम सामने लगे पेड़ की छांव में जा बैठे। गांव के कुछ लोगों को अपनी ओर बढ़ते देखकर हम लोग खड़े हो गये। धूल पसीना, बड़ी दाढ़ी, कुर्ता–जींस देखकर वे लोग क्या सोच रहे होंगे, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था। आईडी देखने और आवासीय पता और यहां आने का उद्देश्य बताने के बाद भी एक सज्जन को यकीन न हुआ तो उसने हम पर आतंकी होने का इल्जाम लगा डाला। तमाम कोशिशों से उन्हें समझाने के बाद किवाड़ पर उसी औरत को पानी लेकर खड़ा देख दिल को थोड़ा सा सुकून मिला। पानी के लिए वह औरत चिल्ला रही थी कि इन्हें पानी तो पी लेने दो। उस समय हमें वह देवी से कम प्रतीत नहीं हो रही थी। मैंने पूरी हिम्मत लगाकर उस देवी की ओर दौड़ पड़ा। इस बात से बेखबर कि पीछे मेरे दोस्त के पीछे हैं हमें आतंकवादी करार करने वाले महानुभाव। उनका लगाव देख मैंने पानी से पहले अपने प्राण बचाने की कोशिश की और पानी को टाटा बोलते हुए अपने मित्रों के संग आगे दौड़ पड़ा।

भागते–भागते कब हम रेत के टीलों के पार बसे दूसरे गांव पहुंच गए, खुद हमें मालूम नहीं। लोगों ने बताया कि वह गांव का एकलौता शिक्षक था। कुछ दिनों बाद उन्नति एनजीओ से पता चला कि वे जनाब पहले से ही जान गए थे कि गांव की शिक्षा प्रणाली पर सवाल उठने वाला है। बच्चों से मिलने पत्रकार आने वाले हैं, जो ऐसे खुलासे कर जाएंगे, जिनसे शिक्षक महोदय की जान आफत में आ सकती है। इसलिए उन्होंने हमें पाकिस्तान का एजेंट बना दिया।

छोटी–छोटी खुशियों से भी खुद को जोड़ें

आयुषी गौड़

मृत्यु जीवन की सबसे बड़ी हानि हैं। हानि तब है जब जिंदा होते हुए भी जिंदगी मर जाए। इन पंक्तियों को पढ़ते ही कुछ जाग सा गया था मन। इन पंक्तियों ने जीवन का बहुत बड़ा सत्य बता दिया था।

मैं अक्सर जिंदगी से बहुत मायूस हो जाती हूं। दुख बहुत बड़ा हो या छोटा, पर फिर भी यह मानने लगती हूं कि दुनिया में सबसे ज्यादा तकलीफ मुझे ही है। लेकिन ऐसा सिर्फ मेरे साथ ही नहीं है आजकल। हर शख्स यही सोच लिए बैठा है। कोई खुश ही नहीं है अपनी जिंदगी से। किसी से एक दफा बस पूछने की देर है, बस लंबी चौड़ी लिस्ट तैयार है दुखों की। पर कभी तसल्ली से बैठकर सोचिए कि क्या वाकई जिंदगी से सिर्फ दुख मिले हैं? क्या सारा सारा दिन हमारे साथ अच्छा नहीं हुआ? कहीं ऐसा तो नहीं कि बड़े होते होते हमने जिंदगी को जीने के बजाए काटना शुरू कर दिया है।

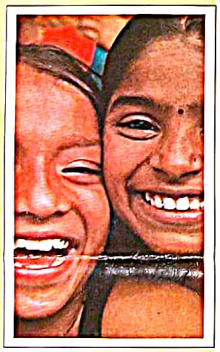

हमारी बढ़ती इच्छाओं ने हमारी छोटी छोटी खुशियों की अहमियत को कम कर दिया है। कितना अच्छा हो न, अगर बचपन की तरह छोटी छोटी बातें हमें आज भी खुश कर जाएं। आज हमें अगर जिंदगी में किसी चीज की जरूरत है तो वह संतोष है। इसलिए जितना मिले उतने के लिए ही खुश रहें लेकिन सफलतम प्रयास हमेशा करते रहें। जब जब जिंदगी में दुख के बादल छाएं तो आसुओं की बरसात करने की बजाए आशा की किरण ढूढें। हजारों तूफानों के बाद भी कोशिश करें कि वह बचपना जिंदा रहे क्योंकि उसके बिना जिंदगी भी खो जाएगी।

कोमल बचपन को बचाना होगा

निधि

बचपन इंसान की जिन्दगी का सबसे हसीं पल होता है। न किसी बात की चिंता और न ही कोई जिम्मेदारी। बस हर समय अपनी मस्ती में खोये रहना, खेलना–कूदना और पढ़ना। लेकिन सभी का बचपन ऐसा हो यह जरूरी नहीं। बाल मजदूरी की समस्या से हम अच्छी तरह वाकिफ हैं। कोई भी ऐसा बच्चा जिसकी उम्र 14 वर्ष से कम हो और वह जीविका के लिए काम करे, बाल मजदूर कहलाता है। गरीबी, लाचारी और माता–पिता की प्रताड़ना के चलते ये बच्चे बाल मजदूरी के इस दलदल में धंसते चले जाते हैं।

आज दुनिया भर में 215 मिलियन ऐसे बच्चे हैं जिनकी उम्र 14 वर्ष से कम है और जो समय स्कूल में कापी–किताबों और दोस्तों के बीच बीतना चाहिए वह होटलों, घरों, उद्योगों में बर्तनों, झाड़ू–पोछा और औजारों के बीच बीतता है। भारत में यह स्थिति बहुत ही भयावह हो चली है। दुनिया में सबसे ज्यादा बाल मजदूर भारत में ही है। 1991 की जनगणना के हिसाब से बाल मजदूरों का आंकड़ा 11.3 मिलियन था। 2001 में यह आंकड़ा बढ़कर 12.7 मिलियन पहुंच गया। बड़े शहरों के साथ–साथ हमे छोटे शहरों में भी [illegible] नुक्कड़ पर कई राजू, मुन्ना, छोटू मिल जाएंगे जो हालातों के चलते बाल मजदूरी बनने को विवश हैं। यह सिर्फ बाल मजदूरी तक ही सीमित नहीं है। इसके साथ ही बच्चों को कई घिनौने काम का भी सामना करना पड़ता है। जिनका बच्चों के मासूम मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। माना जा रहा है कि आज 60 मिलियन बच्चे बाल मजदूरी के शिकार हैं, अगर ये आंकड़े सच हैं तब सरकार को अपनी आंखें खोलनी होंगी। आंकड़ों की यह भयावहता हमारे भविष्य का कलंक बन सकती है। भारत में बाल मजदूरी की इतनी अधिक संख्या होने का मुख्य कारण सिर्फ और सिर्फ गरीबी है। यहां एक तरफ तो ऐसे बच्चों का समूह है जो बड़े–बड़े महंगे होटलों मे 56 भोग का आनंद उठाता है और दूसरी तरफ ऐसे बच्चों का समूह है जो अनाथ है। गरीब है, जिन्हें पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता। दूसरों की जूठन के सहारे वे अपना जीवन यापन करते हैं। दुनिया में बालश्रम का मुख्य कारण गरीबी है।

दुनिया में सबसे अधिक बाल मजदूर भारत में हैं। साल 1991 की जनगणना के मुताबिक बाल मजदूरों की संख्या 11.3 मिलियन थी तो 2001 में यह आंकड़ा बढ़कर 12.7 मिलियन पहुंच गया। बड़े शहरों से लेकर छोटे नगरों तक हर जगह आपको बाल मजदूर मिल जाएंगे...

भारत की राजधानी सहित सभी नगरों में *बालश्रम बदस्तूर* जारी है। घर से बाहर निकलते ही जो पहली चाय की दुकान होती है वहां हमें एक 'छोटू' नजर आ जाता है। वह चाय का कप साफ करता है और हमें चाय देता है। हम आराम से देश में बढ़ रहे बाल श्रम पर चर्चा करते हुए वह चाय पी लेते हैं। मगर यह कभी नहीं सोचते कि अभी–अभी हमने भी बाल श्रम को बढ़ावा दिया। यह कहना है बालश्रम की रोकथाम के लिए काम करने वाली दिल्ली की एक स्वयं सेवी संस्था बचपन बचाओ आन्दोलन के संस्थापक कैलाश सत्यार्थी का।

क्या हमें नहीं लगता कि कोमल बचपन को इस तरह गर्त में जाने से हम रोक सकते हैं? देश के सुरक्षित भविष्य के लिए वक्त आ गया है कि हम सब को अब यह जिम्मेदारी लेनी ही होगी। क्या आप लेंगे ऐसे किसी एक मासूम की जिम्मेदारी?

चारों तरफ शोर उठा है

अवकेश कुमार

चारों तरफ शोर उठा है
फिर से कोई आंदोलन चला है
आज सुबह–सुबह ही हमने
इस खबर को अखबार में पढ़ा है।

कहीं कोई दुकान लुट गई
कहीं कोई इमारत जल गई
कहीं कोई घोटाला हुआ है
कहीं किसी की आबरू लुट गई
तो कहीं से उठी है
किसी के हित में आवाज
आज सुबह–सुबह ही हमने
इस खबर को अखबार में पढ़ा है।

किसने किसका मर्डर किया
किसने जग को जीत लिया
आज क्या रही सरकारी नीतियां
क्या कुछ विश्व पटल पर घटित
हुआ
हर दिन हर खबर को
एक समूची दुनियां को
आज सुबह–सुबह ही हमने
इस खबर को अखबार में पढ़ा है।

सैर कर दुनिया की गालिब

शुभम शर्मा

कई घुम्मकड़ों ने तो अपना सर्वस्य न्योछावर कर दिया दुनिया जानने के लिये तो कई ने अन्य तरीके के रास्ते अपनाये, जो उनके लिए विशेष कारगर साबित हुए...

गालिब की मशहूर पंक्तियों से मैं लेख की शुरुआत करना चाहूंगा, क्योंकि ये पंक्तियां घूमने के जुनून को खुद में पूरी तरह समेटे हुए हैं। हर शब्द सत्य है और घूमने के महत्व को दर्शाता है। घूमना भी एक नशा है, जिसको लग गया सो लग गया। इस नशे से पीड़ित व्यक्ति कभी एक जगह नहीं रुक पाता, वह आज यहां तो कल वहां।

उसे एक जगह रुकने से सुकून नहीं मिलता है। वह समेटना चाहता है दुनिया की हर उस चीज को अपने अंदर, जो उसे रोमांचित कर दे और जब वह मरे तो उसे सुकून मिले कि उसने हर उस चीज को जिया है, जो अन्य किसी व्यक्ति के लिए दुर्लभ थी। हर उस चीज को देखा है, जो खुदा ने बस उसके लिए ही बनाई थी। और फिर वह बांटता फिरेगा अपने सारे उन अनुभवों को, जो किसी और के पास नहीं हैं और लोग उसे सुनने के लिए तरसेंगे, जिससे वह और सुनने वाले दोनों रोमांचित हो उठेंगे। फिर उनकी दुनिया इस दुनिया से ऊपर होगी। हां, सच में, वह भी बिलकुल अलग, क्योंकि उन्होंने जिया है हर उस चीज को, जो प्रकृति द्वारा बनाई गई थी एक अजूबे के तौर पर। और जाना है प्रकृति के हर उस रहस्य को जो सबकी समझ से बाहर थे। परन्तु यह सब संभव किसकी वजह से हो सका है, यह आप बखूबी जान चुके होंगे।

कई घुम्मकड़ों ने तो अपना सर्वस्य न्योछावर कर दिया दुनिया को जानने के लिये। तो कई ने अन्य तरीके के भी रास्ते अपनाये, जो उनके लिए मेरी समझ से विशेष कारगर साबित हुए और उन रास्तों ने उन्हें महान बना दिया। वे एक तरीके से आने वाली पीढी के लिए भगवान बन गए क्योंकि उन्होंने प्रकृति के हर उस रहस्य को जाना, जो सबकी समझ से बाहर था और दुनिया के सामने उस हकीकत को बयान कर दिया। लोगों के लिए यह बातें नई थी परंतु सत्य होने के कारण वह इन्हें नकार न सके। अगर यहां उन लोगों का नाम लिखना शुरू करूं तो वह नाम खत्म ही नहीं होंगे। फिर भी मैं कुछ लोगों का नाम लेना चाहूंगा, और वे हैंए महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर।

हम इंसान हैं और वे भी एक जिन्दा इंसान, जिसकी प्रवृति होती है कि वह अपने आसपास की सारी वस्तुओं के विषय में जाने। उसे जो भी दिख रहा है या नया लग रहा है तो वह उसके विषय में पूरी तरह से जाने। यह सब घुमक्कड़ी जीवन अपनाने से संभव है।

प्रकृति की सुंदरता वह नहीं है जो हम अपने कमरों की खिड़कियों से बाहर झांककर देख रहे हैं और न ही वह है जो दिखाई जा रही है। प्रकृति की असली सुंदरता उन जगहों पर है जहां हम नहीं हैं और न ही कोई दिखाने वाला है। फिर हम उसे आराम से महसूस कर सकते हैं अपने अंतर्मन में और महसूस कर सकते हैं उस खुशी को जो जीवन में एक या दो बार ही महसूस होती है। प्रकृति को किताबों में नहीं पाया जा सकता, न ही किसी और की आंखों से देखा जा सकता है। बस उस विषयवस्तु को जानने की रुचि बढाई जा सकती है।

सापेक्ष होता है सत्ता वर्ग: जोशी

आज के समय में भारत में कम ही लोग ऐसे हैं जो मीडिया और राजनीति को लेकर समग्र और बेबाक सोच रखते हैं और मौके पर लोगों से संवाद भी करते हैं। ऐसे लोगों में रामशरण जोशी शामिल हैं, जो चुनावों से लेकर सोशल मीडिया तक, कारपोरेट से लेकर कारपोरेट की रणनीतियों तक अपनी एक अलग लेकिन पुख्ता राय रखते हैं। रामशरण जोशी से अभिषेक कुमार की बातचीत :

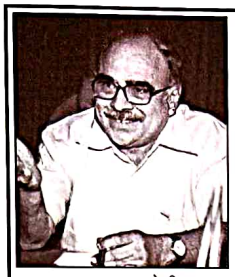

रामशरण जोशी

कारपोरेट समझ गए थे कि मनमोहन सिंह उनके हितों को पूरा नहीं कर पाएंगे तो नए घोड़े पर पैसा लगाना कारपोरेट ने ज्यादा बेहतर समझा। इसे मैं कारपोरेट फासिज्म कहता हूं। इस तरह का फासिज्म लाने के लिए एक प्रखर व्यक्तित्व और लोगों को सम्मोहित करने वाले व्यक्ति की जरूरत थी, जिसमें मोदी संपन्न थे...

अभिषेक : *2014 के लोकसभा चुनाव में मीडिया व सोशल साइटों के अंधाधुंध उपयोग को देखकर क्या आपको लगता है कि चुनावी प्रारूप बदल रहा है?*

जोशी : 2014 का चुनाव निसंदेह भारतीय राजनीतिक इतिहास में महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण होने के कई कारण हैं। अगर राजनीतिक दृष्टि से मैं कहूं तो यह पहली बार हुआ है जब दक्षिणपंथी शक्तियां अपने दम पर दिल्ली पहुंची हैं। हालांकि इससे पहले 1977 में जनता दल के घटक के रूप में ये लोग सत्ता में थे। फिर 1996 में 13 दिन की सरकार बनाने में, फिर 1998 में और 1999–2004 में सरकार भी इन्होंने बनाया था। लेकिन तब ये अपने दम पर नहीं बल्कि बैसाखी के दम पर टिके हुए थे यानी दूसरे घटक दलों के सहारे इनकी सत्ता टिकी हुई थी।

यह पहला अवसर है जब मई 2014 में भाजपा को नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 282 सीटें मिलीं। इस घटना को मैं इस रूप में असामान्य मानता हूं क्योंकि भारत 1947 से लेकर 2014 तक हर सरकार के दौर में मध्यम मार्गी रहा है। भारत हमेशा से मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थक भी रहा है। लेकिन नरेन्द्र मोदी के आने से सारा परिप्रेक्ष्य बदल गया है। इस बदलाव को सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर देखा जा सकता है। इस चुनाव में नव मध्यम वर्ग, जो भूमंडलीकरण के बाद की पैदाइश है, उस वर्ग ने सरकार बनाने में कुछ हद तक एक भूमिका निभाई है। मौजूदा सत्ताधारी दल के नेता की भाषण शैली लोगों को भरमाने वाली है। इसने भी असर डाला। इसी कारणों से भाजपा ने वोटों की बंफर फसल काटी।

अभिषेक : *क्या इस चुनाव के बाद सवर्णों की सत्ता पर पकड़ ढीली पड़ गई है, जैसा कि मुरली मनोहर जोशी और आडवाणी एक तरफ कर दिए गए हैं, अमित शाह देश को पहला ओबीसी प्रधानमंत्री देने की बात करते हैं, क्या आप इससे सहमत हैं?*

जोशी : मैं नहीं मानता कि मोदी के आने से सवर्णों की राजनीति खत्म हुई है। एक बात मानना ही होगा कि मोदी पिछड़ों के राजनीति के माध्यम से सत्ता में नहीं आए हैं। हालांकि जाति कार्ड बड़े महीन तरीके से खेला गया, लेकिन मुझे लगता है कि पिछड़ों की राजनीति और समाजिक न्याय की राजनीति के आज भी कोई प्रखर प्रवक्ता हैं तो वे लालू, नीतीश, मुलायम और वे लोग हैं, जो वीपी सिंह के समय के सामाजिक न्याय के राजनीति में पिरोए हुए थे। वही इसके सच्चे सूत्रधार थे। मुरली मनोहर जोशी और आडवाणी को साइड किए जाने को मैं जाति से जोड़कर नहीं देखता हूं। आपको याद होगा कि जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे तो उस वक्त भी केशुभाई पटेल, शंकर बघेल और न जाने कितने लोगों को अपने रास्ते से दूर किया। मोदी एक अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। राजनीति में जो नेतृत्व उभरता है, कोशिश होती है उस कद का कोई दूसरा व्यक्ति न उभरे। उदाहरण के रूप में इंदिरा को इस संदर्भ में लिया जा सकता है। सत्ता वर्ग सापेक्ष, पर व्यक्ति निरपेक्ष होता है। सत्ता के रास्ते में आने वाले हर रोड़े को हटाया जाता है।

साक्षात्कार

अमित शाह का यह कहना कि पहला प्रधानमंत्री ओबीसी है, बेतुका है। मैं कहना चाहूंगा कि जिस जाट जात को आज ओबीसी का दर्जा मिला है, उसी जाट समुदाय से चौधरी चरण सिंह आते थे, देवगौड़ा को भी इस संदर्भ में देखा जा सकता है। मोदी शाह की राजनीति बाजार की राजनीति को प्रतिबिंबित करता है...

अभिषेक : : *आज लगभग 90 हजार करोड़ रुपए का मीडिया का बाजार है। क्या इतना बड़ा बाजार किसी एक व्यक्ति के इशारे पर चल सकता है?*

जोशी : जिस अदभुत, चरम रणनीति का उपयोग मीडिया के जरिए किया गया है, इससे पहले ऐसा किसी ने नहीं किया था। जिस तरह अमेरिका में सत्ता के लिए मीडिया का चरम उपयोग किया जाता है, मोदी ने भी ठीक उसी तरह मीडिया का उपयोग किया है। मीडिया के आभासी दुनिया के माध्यम से चुनाव जीता, इसके बावजूद मीडिया सब कुछ नहीं है। 2004 में कई नारे जैसे फील गुड, शाइनिंग इंडिया नारे दिए गए, इसके बाद भी एनडीए की हार हुई थी। मोदी के रणनीतिकारों ने वहां से सबक लेकर रणनीति तैयार किया है। कारपोरेट समझ गए थे कि मनमोहन सिंह उनके हितों को पूरा नहीं कर पाएंगे तो नए घोड़े पर पैसा लगाना कारपोरेट ने ज्यादा बेहतर समझा। इसे मैं कारपोरेट फासिज्म कहता हूं। कारपोरेट फासिज्म लाने के लिए एक प्रखर व्यक्तित्व व लोगों को सम्मोहित करने वाले लोगों की जरूरत थी और इस गुण में मोदी संपन्न थे। इतने के बावजूद कहना चाहूंगा कि मीडिया सब कुछ नहीं है, जैसा कि दिल्ली के चुनाव में हर हथकंडे अपनाने के बावजूद बीजेपी हारी है। यदि लोकसभा की बात करें तो भाजपा महज 31 प्रतिशत वोट के साथ सत्ता में काबिज हुई है। मीडिया का जादू तो तब समझा जाता जब ये वोट फीसद 50 प्रतिशत तक पहुंचता। मेरा मानना है कि 7 और 8 स्टार मीडिया जर्नलिस्ट हैं, जिन्हें आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है आखिर वह कब तक कारपोरेट का गुलाम बने रहेंगे।

अभिषेक : *राजदीप सरदेसाई ने एक किताब में लिखा है कि पहले राजनैतिक पार्टियां सेंसर लगाती थीं, अब यह मीडिया तय करने लगा है, आप क्या मानते हैं?*

जोशी : पहली बात तो यह है कि राजदीप यदि अंग्रेजी में लिखते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि वह बिल्कुल सही है। वे इमरजेंसी के भुक्तभोगी नहीं हैं। इमरजेंसी के बाद जब चुनाव हुआ तो इमरजेंसी जैसा कुछ नहीं था। मीडिया में इंदिरा की जमकर आलोचना हुई। हालांकि 15–20 महीने इमरजेंसी रही थी। उस दौर में भी मीडिया में डीडी को छोड़कर लगभग सभी ने विरोध जताया था। मैंने राजदीप सरदेसाई के इस लेख को पढ़ा नहीं, लेकिन यदि वह ऐसा लिखते हैं तो यह उनका आत्म अहंकार है या कोई गलतफहमी है क्योंकि यह किसी और का नहीं, सिर्फ कारपोरेट का लगाया इमरजेंसी है। मीडिया की हर ताकत कारपोरेट के हाथ में है। राजदीप की तरह ही एक बार गलतफहमी टाइम्स आफ इंडिया के संपादक दिलीप पणगावंकर को हो गई थी कि प्रधानमंत्री के बाद कोई यदि सबसे ज्यादा ताकतवर है तो वह टाइम्स आफ इंडिया के संपादक हैं, लेकिन जल्द ही उनका यह भ्रम दूर हो गया।

अभिषेक : पहले के दौर में पत्रकार जन समस्याओं से जुड़े सवाल लेकर आम जन तक पहुंचते थे लेकिन अब यह बात नहीं है। अब पत्रकार हर तरह के प्रश्न का जवाब नेता से चाहता है। आप इसे कैसे देखते हैं?

जोशी : बिल्कुल आज के समय में मीडिया का लोकतंत्र विरोधी चेहरा है। इन्हीं मामलों को लेकर हम लोग वैकल्पिक मीडिया या सिटिजनशिप मीडिया को बढ़ावा देना चाहते हैं।

प्रतिभाओं का पलायन है देश का दुर्भाग्य

पूजा शुक्ला

हमारे यहां लगभग 65 हजार वैज्ञानिक हैं। दुनिया का सबसे बड़ा इंजीनियरिंग कॉलेज भी हमारे देश में है। अमेरिका से चार–पांच गुना ज्यादा इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। हाईटेक रिसर्च इंस्टीट्यूट हैं। आईटीआई की संख्या ज्यादा है, 44 से ज्यादा नेशनल लेबोरेटीज हैं, जो सीएसआईआर के नियंत्रण में हैं फिर भी हम इतने पिछड़े हैं क्योंकि हमारे यहां डिग्री या पोस्ट का अधिक महत्व है।

आज देश भर में हर मां–बाप अपने बच्चों को उच्च से उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं और चाहते हैं कि उनका बच्चा आगे चलकर नाम रोशन करे। बच्चे भी एक अच्छे वेतन वाली जाव और आदर्श जीवन की कामना करते हैं। इन सपनों को अंजाम देने के लिए काफी युवा भारत से ज्ञान अर्जित कर विदेश में उसका बखान करते हैं। उनके मां–बाप बड़े गौरवान्वित होकर कहते हैं कि हमारा बेटा तो न्यूयार्क में है। दूर है पर काफी अच्छी जाव कर रहा है और अच्छे पैसे भी कमा रहा है।

क्या यह सुनकर हमें खुश होना चाहिए? नहीं, यह कोई प्रशंसनीय विषय है ही नहीं पर इसका सबसे बड़ा कारण है सरकारी अर्थव्यवस्था। जहां सब को अपना उल्लू सीधा करने से फुर्सत ही नहीं मिलती। हमारे लोकतंत्र में सभी राजनेता कुर्सी के पीछे दौड़ते हैं फिर सत्ता में आने की होड़ करते हैं और उनके इस व्यवहार से गहरा असर पड़ रहा है। देश की तमाम आईआईटी और चिकित्सा संस्थानों के होने के बाद भी अस्पतालों और इंजीनियरिंग संस्थानों में अच्छे वेतन और सेवा की गारंटी के न होने से देश की प्रतिभा पर गहरा असर पड रहा है।

इसकी शुरुआत 1960 में हुई जब देश का भविष्य बनाने की तलाश में विदेशों के आगे यहां की सरकारें हाथ फैलाने लगीं। एक अध्ययन से पता लगा कि हमारे देश में स्थित बड़ी संस्थाएं (आईआईटी, आईआईएम, एम्स) कहने के लिए तो ये हमारे देश के बड़े संस्थान हैं पर ये पूरे अमेरिकी योजनाओं के तहत काम करती हैं। ऐसा करने से हमारे देश की क्रीम काफी आसानी से मिल जाती है।

अब आप सोच रहे होंगे कि अमेरिका इतना समृद्ध होकर भी अपने यहां ऐसा कोई संस्थान क्यों नहीं खोलता है तो यह आपके लिए जानना बेहद जरूरी है कि अमेरिका को ऐसी व्यवस्था वहां स्थापित करने में जो खर्च आएगा वह उसके 1/6 हिस्से में हमारे यहां से फायदा उठा रहा है। यहां तक कि दूसरे संस्थानों का माहौल भी इस तरह से तैयार किया जाता है कि विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पूरी करके खुद ही अमेरिका के लिए भागेगा और आईआईटी का पाठ्यक्रम भी अमेरिका के द्वारा ही बनाया जाता है। इस प्रतिभा पलायन का लाभ उठाने वालों में हमारे नेता भी शामिल हैं जिन्हें इसका काफी फायदा मिलता है। इसके कारण वे इस पर कोई सख्त कार्रवाई भी नहीं करते। सबसे बड़ी बात है कि हमारे देश में चीन के बाद सबसे बड़ा स्किल्ड मैन पॉवर मौजूद है। हमारे यहां लगभग 65 हजार वैज्ञानिक हैं और दुनिया का सबसे बड़ा इंजीनियरिंग कॉलेज भी हमारे देश में है।

अमेरिका से चार–पांच गुना ज्यादा इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। हाईटेक रिसर्च इंस्टीट्यूट हैं। आईटीआई की संख्या ज्यादा है, नेशनल लेबोरेटीज 44 से ज्यादा हैं, जो सीएसआईआर के नियंत्रण में हैं। फिर भी हम इतने पिछड़े हैं क्योंकि हमारे यहां डिग्री या पोस्ट का अधिक महत्व है। हमारा सारा एजुकेशन सिस्टम डिग्री के जाल में फंसा हुआ है। इसलिए हम बिना डिग्री के वैज्ञानिकों का सम्मान नहीं कर पाते हैं ओर विदेशों में बिना डिग्री के नोबेल प्राइज पुरस्कार विजेता पैदा हो रहे हैं।

एक अध्ययन में पता लगा है कि प्रतिभा पलायन जहां 2000 में 53,000 थे, वहीं 2010 में यह संख्या 1.9 लाख हो गई है। आज भारत इस प्रतिभा पलायन का सबसे बड़ा शिकार बन गया है।

फिल्म रिव्यू

कट्टी–बट्टी

अदिति सकलानी

कट्टी–बट्टी फिल्म में अभिनेता इमरान खान और कंगना रनौत ने अभिनय किया है और अपनी कला का सफल प्रदर्शन किया है। यह नई जीवन शैली पर केंद्रित है, जिसे 'लिव इन रिलेशनशिप' की संज्ञा दी गई है। इस लिहाज से इस फिल्म ने समाज में विद्यमान इस नई नब्ज को बखूबी पकड़ा है।

फिल्म में सारे कलाकारों का काम सराहनीय है। खासकर इमरान खान का अभिनय काबिले तारीफ कहा जा सकता है। फिल्म ने साथ ही साथ सच्चे प्रेम के अर्थ को भी दर्शकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। किसी अपने से जुड़ी यादों को सहेजकर रखना, प्रेम का अर्थ सिर्फ साथ रहना नहीं, अपितु साथ निभाना भी होता है, ऐसा संदेश यह फिल्म देती है। फिल्म में गानों ने चार चांद लगा दिए। फिल्म में दम है। कलाकारों का अभिनय दमदार है, इसकी वजह से इसे अच्छी सफलता भी प्राप्त हो रही है और बिना किसी द्वंद्व के यह दर्शकों की स्मृति में मौजूद रहेगी।

कोर्ट

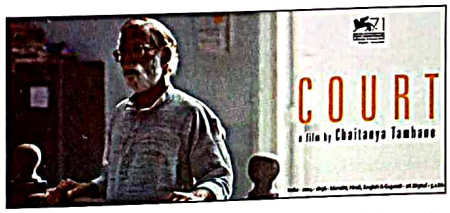

दीपाली

मराठी फिल्म कोर्ट को भारत की तरफ से ऑस्कर में विदेशी भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ फिल्म श्रेणी के लिए चयनित किया गया है। चैतन्य तमहने के निर्देशन में बनी यह फिल्म मूल रूप से एक लोक कलाकार के चश्मे से भारतीय न्याय प्रणाली पर प्रकाश डालती है।

एक गटर साफ करने वाले कर्मचारी की मौत के बाद नारायण कांबले नामक लोक कलाकार पर यह आरोप लगाया जाता है कि भड़काऊ और जोशीले शब्दों से युक्त उसके गीत को सुनकर ही वह आत्महत्या के लिए प्रेरित हुआ। उसकी गिरफ्तारी में ब्रिटिश काल से चली आ रही ऐसी धाराओं को उस पर थोपा जाता है, जिनका आज के जमाने से कोई लेना–देना नहीं है। लेकिन पुलिस ने तो गवाह भी इकट्ठा कर लिए, जो यह साबित कर रहा था कि वह सफाई कर्मचारी कांबले का गीत सुनने गया था। यह अलग बात थी कि इस मुकदमे के अलावा चार और मुकदमों में वही जांच करने वाला पुलिसकर्मी और वही गवाह थे। इस तरह यह फिल्म पुलिस व्यवस्था और जांच प्रणाली पर भी कड़ी चोट करती है। भारतीय सुधार–गृह यानी कि जेल के हालातों पर भी नजर डालती पितृसत्ता की झलक भी इस फिल्म में देखने को मिलती है। दक्षिणपंथी कट्टरवादियों के कारनामों का खुलासा भी होता है। जब बचाव पक्ष के वकील का अर्थपूर्ण सवाल उठाने के लिए एक कौम–विशेष के खिलाफ आरोप लगता है और भावनाएं आहत होने से कुछ लोग वकील के मुंह पर कालिख पोत देते हैं। कुल मिलाकर फिल्म देखने लायक है।

ऑस्ट्रेलिया के बाद अब टी–ट्वेंटी

अर्शियान आरिफ

नई दिल्ली। दो जनवरी से शुरू हुई भारत–ऑस्ट्रेलिया के बीच एक दिवसीय मैचों की श्रृंखला खेली गई। इसमें ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 4–1 से मात दी। एक तरफ जहां भारतीय बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन

ऑस्ट्रेलिया के साथ वनडे सीरीज में भारतीय बल्लेबाजों ने जलवे बिखेरे।

करके विशाल स्कोर कायम कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर भारतीय गेंदबाज ऐसी बचकानी गेंदबाजी कर रहे थे कि विपक्षी ऑस्ट्रेलिया 300 रनों के पहाड़ को आसानी से पार कर रहे थे। इस वजह से भारतीय गेंदबाजों की खासी आलोचना भी हुई। बात जगजाहिर है कि भारतीय खेमा हमेशा से ही गेंदबाजी में उन्नीस साबित हुआ है और खेल का यह हिस्सा हमेशा से ही भारत के लिए एक कमजोर कड़ी रहा है।

भारत को लगातार दो मैचों में 300 से अधिक रनों का लक्ष्य देने के बावजूद भी हार का मुंह देखना पड़ा, जबकि एक मैच में 309 रनों का अंबार भी भारतीय टीम की लाज न रख सकी। हालांकि, पिचों का बल्लेबाजों के अनुकूल बनाया जाना भी गेंदबाजों की दुर्दशा का कारण रहा, लेकिन भारतीय गेंदबाजी की कमजोरी का ठीकरा मात्र पिचों पर नहीं फोड़ा जा सकता। जहां भारतीय बल्लेबाजी हमेशा से ही विश्वस्तरीय मानी जाती रही है, वहीं इस श्रृंखला में एक मंजर ऐसा भी आया जब 349 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय सलामी जोड़ी ने खूब दम दिखाया। बावजूद इसके मध्यक्रम की कमर ऐसी टूटी की भारत को हार का सामना करना पड़ा।

श्रृंखला के आखिरी मैच में डर से खेलती हुई टीम इंडिया ने 331 रनों का पीछा बेहतरीन ढंग से किया। लगा ही नहीं कि जो टीम पिछले चार मैचों से जीत के आगे लार टपका रही थी, उसे ऐसी जीत का स्वाद चखने को मिलेगा।

4–1 की करारी शिकस्त के बाद भी अगर देखा जाए तो बहुत कुछ सकारात्मक है जो इस श्रृंखला से भारत को हासिल हुआ है। मसलन, भारतीय सलामी जोड़ी का लाचार प्रदर्शन इस श्रृंखला में निखर गया। लगभग हर मैच में सलामी बल्लेबाजों ने कंगारुओं को अपने बल्ले से खूब सलामी दी। वहीं, भारतीय टीम के उपकप्तान विराट कोहली ने इस श्रृंखला में जबरदस्त वापसी की। रोहित शर्मा ने भी अपनी लय वापस पा ली है और वहीं, मनीष पाण्डेय नामक युवा सितारा भारतीय टीम को हासिल हुआ है।

हालांकि भारतीय टीम ने 4–1 की हार से सबक लिया और भारत ने आस्ट्रेलिया को टी–20 सीरीज में 3–0 से हराकर कंगारूओं को करारा जवाब दिया। युवा जस्प्रीत बुमराह ने एक बार फिर से सभी को प्रभावित किया। अब भारतीय टीम की नजर वर्ल्ड टी–20 पर होगी। कंगारू टीम को 3–0 से हराकर भारती टीम मे काफी आत्मविश्वास भी है।

अधिक सुविधाएं भी बन रही हैं मुसीबत

शिवानी कोटनाल

नई दिल्ली। वह कैब से उतरा और उतरते ही एक फूड रेंटर से नूडल्स व कुछ और खाना पैक करवा घर की ओर चलने लगा। उसका घर कुछ ही दूरी पर था। हर बार कुछ मिनटों में ही वह इस दूरी को तय कर लेता था, लेकिन इस बार यह दूरी उसके लिए इतनी लम्बी हो गयी कि वह उस दिन ही नहीं कभी घर ही नहीं पहुंच सका।

बीती चार अप्रैल को देर रात सिद्धार्थ शर्मा नाम का व्यक्ति सिविल लाइंस के शामनाथ मार्ग पर रोड क्रॉस कर रहा था। इस बीच तेज रफ़्तार से बीआईपी नम्बर वाली मर्सिडीज कार उसे रौंद कर चली गयी। कार की स्पीड इतनी तेज थी कि सिद्धार्थ 15 से 20 फुट हवा में उछल गया। इसके साथ ही वह रोड के दूसरी ओर गिर गया। हादसा इतना भयानक था कि सि(र्थ ने कुछ समय बाद ही दम तोड़ दिया। पुलिस की प्राथमिक जांच में पता चला कि हादसे के वक्त मर्सिडीज में आठ लड़के सवार थे, जिसमें अधिकांश नाबालिग थे। एक तरह से यह मामला हिट एंड रन का था। साथ ही सभी आरोपी नाबालिग।

विचारणीय विन्दु यह है कि देश में एक तरफ किसी की जान लेना एक जघन्य अपराध माना जाता है वहीं दूसरी ओर नाबालिग अपराधियों को बड़ी राजा न देने का भी प्रावधान है। ऐसी स्थिति में मामला जुवेनाइल बोर्ड तक ही सीमित रह जाता है।

हिट एंड रन के मामले आए दिन समाचार पत्रों में पढने को मिलते हैं। इसमें अनेक मामलों में नाबालिग भी लिप्त होते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर अपराध के लिए किसे अपराधी माना जाए? इस तरह की घटनाओं में निर्दोष लोगों की जान चली जाती है तो अनेक लोग घायल होकर अपंग हो जाते हैं। इन घटनाओं में मृतक के परिवारों की जिंदगी कैसे कटेगी? घायलों और उनके परिवारीजनों के लिए दो जून की रोटी का इंतजाम कैसे होगा, घटनाओं को अंजाम देने वाले यह दूर–दूर तक नहीं सोचते।

विकलांगता अभिशाप नहीं

अंजनी कुमार तिवारी

नई दिल्ली। कुछ भारतीय शख्सियत हैं, जिन्होंने विकलांगता को अभिशाप नहीं खुद का हथियार बनाया या विकलांगता को अवसर में बदला और अपने सपने और लक्ष्य को प्राप्त किया।

भारत में करीब दो करोड़ से अधिक लोग किसी न किसी तरह की विकलांगता से पीड़ित हैं। विकलांगों में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की संख्या अधिक है।

अंतरराष्ट्रीय विकलांगता दिवस

प्रतिवर्ष तीन दिसम्बर को अंतरराष्ट्रीय विकलांगता दिवस मनाया जाता है। इसकी स्वीकृति संयुक्त राष्ट्र संघ ने 3 दिसम्बर 1991 में दी थी।

विकलांगता दिवस का उद्देश्य

अंतरराष्ट्रीय विकलांगता दिवस का उद्देश्य आधुनिक समाज में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के साथ हो रहे भेदभाव को खत्म करना है।

सरकार का दायित्व

भारत सरकार हमेशा से ही समाज के हर वर्ग को आगे लाने व उनके विकास के लिए प्रयत्नशील रही है। सरकार ने शुरु से ही विकलांगों के लिए कार्यक्रम चला रखा है।

विकलांगता अधिनियम 1995

इसके तहत विकलांगजनों के अधिकारों को सुनिश्चित किया गया है। उन्हें भी सामान्य लोगों की तरह अधिकार दिया गया है और कानूनी अधिकार सुनिश्चित किए गए हैं ताकि वह भी सामान्य लोगों की तरह जी सकें।

सुधा चन्द्रन : केरल की सुधा चंद्रन एक प्रख्यात क्लासिकल डांसर हैं। 16 साल की उम्र में एक सड़क हादसे में अपना पैर गंवा चुकी थी वह, लेकिन कृत्रिम पैर (जयपुर फुट) के सहारे से डांस की ट्रेनिंग शुरू की। आज वह एक प्रसिद्ध डांसर हैं। टेलीविजन एवं फिल्मों में उन्होंने अहम किरदार भी निभाया है। कई पुरस्कार भी उन्होंने जीता है।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी–पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित 'मीडिया के बदलते आयाम' विषयक व्याख्यान में मौजूद विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार, मुख्य वक्ता व मीडिया विश्लेषक आनंद प्रधान और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा।

अमेरिकी चुनाव और डोनाल्ड ट्रम्प

नई दिल्ली। पूरे विश्व की निगाहें अमेरिका में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव पर टिकी हैं, लेकिन अमेरिका कई मशहूर हस्तियां डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने पर अमेरिका छोड़ने तक की धमकी दे रही हैं।

रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी के तौर पर डोनाल्ड ट्रम्प अपने बयानों से जाहिर करते रहे हैं कि उनके शासन में मुस्लिमों व अप्रवासियों के लिए जगह नहीं है। गत दिनों इकोनॉमिक इंटेलीजेंस यूनिट के सर्वे से पता चला कि विश्व के दस सबसे बड़े खतरों में डोनाल्ड ट्रम्प का राष्ट्रपति बनना भी शामिल है। अमेरिका में जहां एक ओर डोनाल्ड ट्रम्प के विरोधी स्वर मुखर हो रहे हैं तो दूसरी ओर समर्थन में भी लोग खड़े हो रहे हैं। पिछले कुछ सालों से आतंकी संगठनों की ओर से लगातार किए जा रहे नृशंस हमलों से लोग दहशत में हैं। इन परिस्थितियों का सीधा फायदा डोनाल्ड ट्रम्प जैसे नेताओं को मिल रहा है।

कुमार संगाकारा ने लिया सन्यास

अर्शियान

नई दिल्ली। संगा नाम से प्रसिद्ध श्रीलंकन खिलाड़ी कुमार संगाकारा का नाम चोकपानडा संगाकारा है। संगाकारा का जन्म 27 अक्टूबर 1977 को श्रीलंका के मटाले में हुआ। उनके माता पिता का नाम कुमारी और चोकपानडा संगाकारा हैं। उन्होंने कांडी कॉलेज ट्रिनिटी में पढ़ाई की और उस वर्ष के राइड पदक के विजेता बने। उन्होंने स्कूल के दौरान अपनी टेनिस और क्रिकेट की प्रतिभा को दिखाया।

स्कूल के प्राचार्य लियोनार्ड डी अल्विस ने ही उनकी माता को संगाकारा को क्रिकेट खेलने के लिए प्रोत्साहित करने की सलाह दी थी। वह बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं और घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रर्दशन करने के बाद उन्हें पहली बार पाकिस्तान के खिलाफ एकदिवसीय मैच खेलने का मौका मिला। संगाकारा ने लगभग 508 मैच खेले हैं जिनमें 134 टेस्ट और 404 एकदिवसीय हैं जिनमें उन्होंने 125 अर्धशतक और 63 शतक लगाए हैं। इसके अलावा मिड विकेट

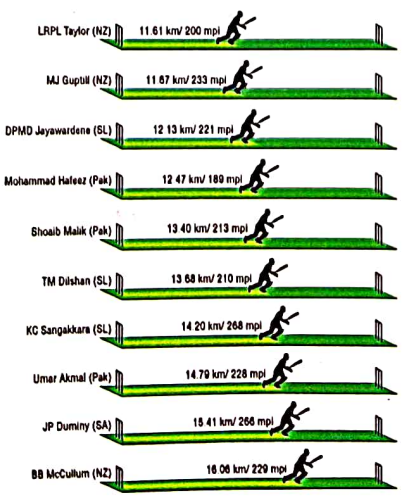

रनिंग में भी वे सातवें पायदान पर हैं। संगाकारा ने अपना आखिरी टेस्ट मैच 24 अगस्त को भारत के खिलाफ खेला और एकदिवसीय मैच

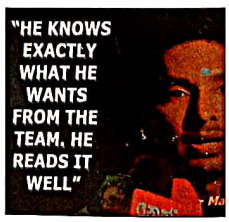

संगाकारा ने अपना आखिरी टेस्ट मैच भारत और एकदिवसीय मैच साऊथ अफ्रीका के साथ खेला।

साउथ अफ्रीका के साथ खेला।

अंतरराष्ट्रीय करियर से उनके संन्यास के बाद से श्रीलंका टीम कमजोर सी दिखने लगी है। जाहिर सी बात है की बेहतरीन रिकॉर्ड रखने वाले खिलाड़ी के रिटायर हो जाने से थोड़ा झटका तो लगेगा ही और इसके बाद अगर हम उन्हें श्रीलंका टीम की हड्डी कहें तो कुछ गलत नहीं होगा। श्रीलंका टीम में उनका पद ठीक सचिन जैसा है।

आरएलए समाचार
संरक्षक
डॉ. विजय कुमार शर्मा, प्राचार्य
विभागाध्यक्ष
डॉ. संजय कुमार
परामर्शदाता
डॉ. सुभाष चन्द्र डबास
डॉ. अर्चना गौड़
मार्गदर्शक
डॉ. अटल तिवारी
विनीत कुमार 'उत्पल'
संपादक
नेहा कौशिक
उप संपादक
अभिषेक कुमार
अंजनी कुमार तिवारी
अर्शियान आरिफ
नोट : आरएलए समाचार में प्रकाशित सामग्री के विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।